

इकाई-2

2 शिक्षण अधिगम के विभिन्न संदर्भ

2.1 परिचय

2.2 उद्देश्य

2.3 सामाजिक संस्कृति के संदर्भ में अधिगमकर्ताओं में अंतर।

2.4 अधिगमकर्ता का मातृभाषा पर प्रभाव एवं भाषा निर्देश।

2.5 अधिगम कठिनाईयों के आधार पर व्यक्तिगत भिन्नता को समझना।

2.6 मन्द अधिगामी बालक।

2.6.1 कारण।

2.6.2 विशेषताएं।

2.6.3 वर्गीकरण।

2.6.4 समस्याएँ।

2.6.5 सुझाव

2.7 डिस्ट्रेक्सिया या भाषाई विकार।

2.7.1 पहचान

2.7.2 सहायता देने वाले पद।

2.8 प्रतिभा संपन्न बालक

2.9 असक्षम बालक।

2.10 प्रतिभाशाली बालक।

2.10.1 पहचान।

2.10.2 समस्याएँ।

2.10.3 शिक्षा।

2.11 वैयक्तिक भेद के आधार पर शिक्षा व्यवस्था।

2.12 इकाई सारांश।

2.13 दीर्घ एवं लघु प्रश्न।

2.14 इकाई से अपने उत्तरों की जाँच कीजिए।

2.15 संदर्भ ग्रन्थ।

2 शिक्षण अधिगम के विभिन्न संदर्भ

2.1 परिचय – इकाई 2 शिक्षण अधिगम के विभिन्न संदर्भ से संबंधित है। इस इकाई में हम सामाजिक संस्कृति के संदर्भ में अधिगमकर्ता में अंतर, अधिगमकर्ता पर मातृभाषा का प्रभाव एवं भाषा निर्देश का वर्णन विस्तार से करेंगे। बालकों में सीखने में आने वाली कठिनाइयों और भिन्नताओं पर विचार किया गया है।

2.2 उद्देश्य –

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप।

- छात्रों में सीखने में आने वाली कठिनाइयों को जान सकेंगे।
- प्रतिभाशाली बालकों के संबंध में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- मन्द अधिगामी बालक, डिस्लेक्सिया से ग्रस्त बालकों का अध्ययन कर सकेंगे।
- व्यक्तिगत भेद के बारे में अध्ययन कर सकेंगे।

2.3 सामाजिक संस्कृति के संदर्भ में अधिगमकर्ताओं में अंतर

बालक का अधिगमकर्ता के रूप में विकास सीखने की प्रक्रिया पर निर्भर करता है। बालक जो कुछ भी सीखता है, वह सामाजिक संस्कृति के आधार पर ही सीखता है। जन्मजात स्वाभाविक क्रियाओं को भी बालक सीखने के आधार पर परिवर्तित कर लेता है तथा उसका रूप सामाजिक बना लेता है। सीखने की यदि यह प्रक्रिया न होती, तो सामाजिक संस्कृति का कोई भी अस्तित्व नहीं रह जाता।

अधिगम की प्रक्रिया में कोई एक लक्ष्य तथा उस लक्ष्य तक पहुंचने में बाधा दोनों ही सम्मिलित रहते हैं। सीखना सदैव अर्थपूर्ण होता है। अधिगमकर्ता के सामने जब कोई अर्थपूर्ण लक्ष्य होता है, तो वह उसकी प्राप्ति के लिए प्रत्यनशील हो जाता है, किन्तु लक्ष्य तक पहुंचने में उसके सामने अनेक बाधाएँ अथवा कठिनाइयाँ पैदा हो जाती हैं।

जैसी सामाजिक संस्कृति होती है, सीखने की क्षमता उसी तरह की होती है। यदि सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण उच्च स्तर का है, तो अधिगमकर्ता अच्छे तरीके से सीखता है और सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण निम्न स्तर का है, तो वह अच्छे तरीके से संस्कृति के बारे में ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता।

2.4 अधिगमकर्ता का मातृभाषा पर प्रभाव एवं भाषा निर्देश

सभी व्यक्तियों के जीवन में मातृभाषा का स्थान सर्वोपरि है। बालक मातृभाषा अपने माता पिता से सुनकर स्वाभाविक रूप में अनुकरण से सीख लेता है, इस भाषा से उसका निकट का संबंध होता है। अपनी आत्मीय भावनाओं एवं विचारों को यथार्थ रूप में मातृभाषा के माध्यम से प्रस्तुत करता है और सुविधा और सरलता से अभिव्यक्त कर लेता है। शिक्षा ग्रहण करने में मातृभाषा का स्थान महत्वपूर्ण है।

भाषा निर्देश –

- पाठ पढ़ाने से पूर्व, पूर्व ज्ञान का पता लगा ले। पूर्व ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान की ओर अग्रसर होना चाहिए।
- बालकों की रुचि एवं क्षमता के आधार पर प्रश्न पूछे जाने चाहिए।
- पाठन के समय दृश्य-श्रव्य उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए।
- पाठ को मनोरंजक बनाकर पढ़ाना चाहिए।
- छात्रों के साथ सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करना चाहिए।
- अध्यापन खेल द्वारा क्रिया द्वारा एवं अनुभव द्वारा संपादित किया जाना चाहिए
- रचना तथा गद्य की अन्य विधाओं में चित्र उदाहरण तुलना संस्मरण आदि का प्रयोग करना चाहिए। ताकि छात्र पाठ में पूरा आनंद ले।
- गद्य या कविता पढ़ाते समय शिक्षक को चाहिए कि वह उसमें छिपे हुए मूल्य को उजागर करें, ताकि मातृभाषा मूल्य सम्प्रेषण का सर्वोत्तम साधन बन जाये

2.5 अधिगम कठिनाइयों के आधार पर व्यक्तिगत भिन्नता को समझना।

मनोविज्ञान व्यक्तिगत भिन्नता के आधार शिक्षण देना चाहता है। एक ही कक्षा में छात्रों में वैयक्तिक विभिन्नताएँ होती हैं। कोई छात्र शुद्ध उच्चारण नहीं करता, तो किसी का लेख स्पष्ट नहीं होता, किसी का वाचन, तो किसी का लेख अशुद्ध है, कोई मौन पाठ नहीं कर पाता, तो कोई कई बार याद करने पर भी भूल जाता है इसलिए अध्यापक को इन सबकी वैयक्तिक भिन्नता एवं अधिगम कठिनाइयों को ध्यान में रखकर शिक्षण प्रदान करना चाहिए। छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों का निवारण करने का प्रयास करना चाहिए। इसी कारण शिक्षाशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों ने वैयक्तिक भिन्नता में आने वाली कठिनाइयों पर विशेष बल दिया है।

2.6 मन्द अधिगामी बालक

मन्द अधिगामी बालक उन बालकों तथा किशोरों को कहते हैं जिनके अधिगत तथा शैक्षिक निष्पत्ति सामान्य बालकों से निम्न स्तर की तथा एक से अधिक विषय में होती है। उनके सीखने की गति धीमी होती है। उनकी तुलना शैक्षिक रूप से मानसिक मन्दित बालकों से की जा सकती इनका मानसिक स्तर सामान्य से निम्न अथवा बुद्धि-लब्धि (75-90) के मध्य होती है।

मन्द अधिगामी बालक का विकास, समायोजन, आत्मनिर्भरता अपनी आयु वर्ग के बालकों के समान नहीं अर्थात् कम है तब इन्हें भी मन्द अधिगामी कहा जा सकता है। यदि बालक सामान्य कक्षा को अनुकूलित नहीं कर पाता तो भी मन्द अधिगामी कहलायेगा।

उन बालकों को इस वर्ग में रखा गया है, जिनकी सीखने की गति धीमी हो और योग्यता भी सीमित हो। इस प्रकार के सभी बालकों में शैक्षिक मन्दता होती है। इसके अनेक कारण हैं। सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, माता पिता में समायोजन न होना।

जॉनसन ने मन्द अधिगामी बालकों को विशाल समूह कहा है, जो मानसिक रूप से मंदित होता है। इसी प्रकार इन्ग्राम ने मन्द अधिगामी बालको शैक्षिक रूप से मानसिक मन्दित माना है। जबकि सिरिल बर्ट ने (1973) में मन्द अधिगामी को पिछड़े की संज्ञा दी है। क्योंकि इस प्रकार के बालक अपनी आयु के सामान्य बालकों के साथ शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते हैं। क्रिक ने (1962) में सीखने की गति के आधार पर पहिचान की थी। इनके अनुसार प्रतिभाशाली और सामान्य बालकों की पहिचान की सीखने की गति के आधार पर की। इन्होंने शैक्षिक सफलता और शैक्षिक निष्पत्ति को भी आधार माना और कहा कि यदि सामान्य बालक की शैक्षिक उपलब्धि अपने आयु वर्ग से कम है तब उसे भी मन्द अधिगामी माना।

2.6.1 मंद अधिगामी बालकों के कारण

शैक्षिक दृष्टि से मंद अधिगामी बालक सामान्य से निम्न स्तर के होते हैं, इनके लिए शिक्षा के विशेष स्वरूप की आवश्यकता होती है। इनके अनेक कारण हो सकते हैं। जैसे— विद्यालय से अधिक समय तक अनुपस्थित रहना, लंबी बीमारी से पीड़ित रहना, किसी दुर्घटनावस शारीरिक क्षति व उपचार के कारण विद्यालय में अनुपस्थित रहना तथा संवेगात्मक बाधाएं भी कारण होती हैं। मंद अधिगामी बालक के 4 प्रमुख कारण माने जाते हैं :-

1. आर्थिक परिस्थिति या गरीबी
2. परिवार के सदस्यों का मानसिक स्तर
3. संवेगात्मक घटक
4. व्यक्तिगत घटक

2.6.2 मन्द अधिगामी बालकों की विशेषताएं

- (1) मन्द अधिगामी बालकों की ज्ञानात्मक क्षमता सीमित होती है। यह अधिगम परिस्थितियों से समायोजन नहीं कर पाते अधिकतर असफल रहते हैं।
- (2) स्मृति स्तर कम होता है, इसका कारण यह कि वह अधिगम प्रक्रिया में एकाग्र नहीं हो पाते।
- (3) मन्द अधिगामी बालक अपने विचार की अभिव्यक्ति करने में भाषा की कठिनाई का अनुभव करते हैं।
- (4) मन्द अधिगामी बालकों को सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक समस्याएं होती हैं, इन बालकों की शैक्षिक उपलब्धि संतोषजनक नहीं होती हैं। जो बालक अच्छे परिवारों से आते हैं। उनका व्यवहार तथा उपलब्धि अच्छी होती है।
- (5) सामान्य कक्षा शिक्षण परिस्थिति में मंद अधिगामी एकाग्र नहीं कर पाते हैं। उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर मंद अधिगामी बालकों की विशेषताओं को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

अ शारीरिक विशेषताएं

ब अवधारण तथा स्मृति का अभाव

स असुरक्षा का अभाव

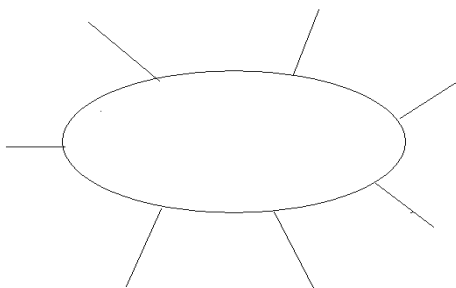
2.6.3 मन्द अधिगामी बालकों का वर्गीकरण

मन्द अधिगामी बालकों को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है।

- (1) मस्तिष्क के क्षतिग्रस्त होने से यह नाडी संस्थान में कोई दोष आने से मंद गामी हो जाते हैं उन्हें पढ़ने में कठिनाई होती है। शब्दों तथा वाक्यों को सही अर्थ में समझ नहीं पाते।
- (2) दृष्टि तथा श्रवण इंद्रियों में किसी प्रकार के दोष के कारण मन्द अधिगामी हो जाता है, जिससे पाठ्य वस्तु का अर्थ समझ नहीं पाता। वाए हाथ से काम करने में कठिनाई होती है।
- (3) किसी लम्बे रोग के कारण भी बालक मंद अधिगामी हो जाता है। कभी-कभी दवाओं के सेवन से ज्ञानेन्द्रिय भी प्रभावित हो जाती है, जिससे पढ़ने व समझने में कठिनाई हो सकती है।

2.6.5 मंद अधिगामी बालकों की पहचान

शारीरिक रूप से बाधित जैसे— दृष्टिबाधित, श्रवण बाधित तथा अपंग बालकों की देखकर पहचान कर ली जाती है। शारीरिक रूप से बाधित बालक मंद अधिगामी होते हैं, परन्तु सभी प्रकार के मंद अधिगामियों की पहचान देखकर नहीं की जा सकती।



विशेषज्ञों और मनोवैज्ञानिकों ने अनेक प्रकार के परीक्षण और प्रविधियों का विकास किया जिसके आधार पर मंद अधिगामियों की पहचान की जाती है :-

1. निरीक्षण प्रविधि
2. एकल अध्ययन विधि
3. डॉक्टरी परीक्षण
4. शैक्षिक परीक्षण
5. व्यक्तित्व परीक्षण
6. बुद्धि परीक्षण
7. मनोवैज्ञानिक परीक्षण

2.6.4 मंद अधिगामी बालकों की समस्याओं को 5 भागों में विभाजित किया जा सकता है। ज्ञानात्मक अधिगम समस्याएं, भाषा तथा वाणी की समस्याएं, श्रवण प्रत्यक्षीकरण की समस्या, दृष्टि और व्यवहारिक समस्याएं तथा सामाजिक तथा संवेगात्मक समस्याएं

2.6.5 मंद अधिगामी बालकों हेतु सुझाव

मंद अधिगामी बालकों का मानसिक स्तर सामान्य होने तथा शैक्षिक मन्दिता के परिणाम स्वरूप अधिक विकास नहीं किया जा सकता है। इनके भाषा की बोधगम्य क्षमता सीमित होती है। भाषा तथा मानसिक विकास में घर का और विद्यालय के

वातावरण योगदान होता है। उनके ज्ञान और अनुभव में वृद्धि की जा सकती है परन्तु सीखने की गति में वृद्धि कम ही होती है। सैमुइल का कथन है कि –

1. आन्तरिक रूप से शिक्षण कुछ नहीं किया जाये अपितु बाह्य वातावरण से ही अधिक सीखता है।
2. ऐसी वस्तुओं से शिक्षण कुछ न किया जाये जो अमूर्त है क्योंकि यह बालक प्रत्यक्ष अवलोकन से ही सीखते हैं।
3. कक्षा का वातावरण स्वाभाविक हो जिससे पुस्तकों तथा अन्य सहायक सामग्री का उपयोग आवश्यकतानुसार कर सके।

सामान्य विद्यालयों को इन नियमों का अनुसरण करना चाहिए और शैक्षिक पर्यटनों की व्यवस्था करनी चाहिए। इस सम्बन्ध में चार मुख्य सुझाव दिये जाते हैं –

1. प्रोन्नत न किया जाये
2. पुनर्बलन दिया जाये
3. व्यक्तिगत रूप से बालक का ध्यान दिया जाये
4. पुनर्बलन की प्रविधियों का समुचित उपयोग

इन बालकों को प्रोन्नत के संबंध में भिन्न-भिन्न विचार हैं परन्तु शोध अध्ययनों के सुझाव हैं कि इन्हें प्रोन्नत न किया जाये अपितु सुधारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जाये। इन बालकों में अपेक्षित व्यवहारों को तत्काल पुनर्बलन दिया जाना चाहिए। पुनर्बलन की समुचित प्रविधि का उपयोग करना चाहिए। इन बालकों के उत्तम उपचार यह है कि समझने का प्रयास करके और उसी के अनुरूप उन्हें सुविधा तथा सहायता प्रदान करें। शिक्षण में समुचित सहायक प्रतिनिधियों का उपयोग करें।

अध्यापक द्वारा क्रिया कलाप

अपने निकट के किसी मंद बुद्धि बालक को चुनकर उसकी निम्न जानकारी एकत्रित करें।

नाम

पिता का नाम

कक्षा

पिछली कक्षा में उपलब्धि

भाई-बहिन की संख्या

शिक्षा में कोई समस्या

समस्या समाधान के उपाय

शौक

कारण

2.7 डिसलेक्सिया या भाषायी विकार

Dyslexia or Liguistic Disability

डिसलेक्सिया भाषायी विकार अर्थात् विशिष्ट सीखने की कठिनाईयों के संबंध में डिसलेक्सिया का प्रयोग किया जाता है। डिसलेक्सिया ग्रीक भाषा से निकाला गया है। Dys से तात्पर्य निर्धन या अपर्याप्त और Lexis का अर्थ है शब्द। विद्यार्थी जिन्हें डिसलेक्सिया है वह पठन स्पेलिंग भाषा को समझने में जो वह सुनते हैं या बोलने तथा लिखने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

एक डिसलेक्सिया की परिभाषा वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ न्युरोलॉजी ने दी है। वह है “एक विकार जो स्पष्ट होता है पठन को सीखने में कठिनाई से परम्परागत शिक्षण देने के पश्चात भी पर्याप्त बुद्धि होने पर भी तथा सामाजिक-सांस्कृतिक अवसरों के मिलने पर भी” यह मूल ज्ञानात्मक अयोग्यताओं पर निर्भर है जो बहुदा शारीरिक वनावट के कारण होती है।

बालको में डिसलेक्सिया जन्म के समय से ही हो जाता है। यह भी देखा गया है कि डिसलेक्सिया बालक के परिवार के अन्य सदस्य भी डिसलेक्सिक होते हैं। एक अभिभावक भाई या बहिन, चाचा या बाबा दादी को पढ़ने और स्पेलिंग सीखने में कठिनाई हुई होगी। डिसलेक्सिया मस्तिष्क की संरचना तथा कृत्यों में विविध का परिणाम होता है।

वाचन परिशुद्धता गति तथा बोध की समस्याएं। बार-बार वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियां करना। शब्दों में अक्षरों की स्थिति में उलट-फेर कर देना या अक्षरों के क्रम में परिवर्तन कर देना जबकि उनको विद्यार्थी पढ़ रहा है या लिख रहा है। बोल चाल में देरी। अक्षरों के नाम करण में त्रुटियां। छपों हुए शब्दों को सीखने व याद करने में कठिनाइयां। सही शब्द को बोल पाने में कठिनाई। लिखने की धीमी गति। गणित में कठिनाई— बहुदा पदों के क्रमों या दिशा में। सीधे या उल्टे हाथ प्रयोग के संबंध में अनिश्चय।

2.7.1 डिसलेक्सिक बालक की पहचान

डिसलेक्सिक की पहचान उसका वाचन, लेखन तथा गणित में निष्पादन का पता करके की जा सकती है। फिर भी शिक्षकों को इनकी पहचान करने के लिए विशेष प्रशिक्षण देना चाहिए तथा इसके लिए भी कि वह सुधारात्मक विधियों को उनके साथ प्रयोग कर सकें।

एक विधि जो डिसलेक्सिया बालक की पहचान के लिए है वह उसके वर्तनी सम्बन्धी निष्पादन का निरीक्षण है। वह डिसलेक्सिक ऐसी त्रुटियाँ कर सकता है जैसे tran लिखना train के स्थान पर, shot लिखना shout के स्थान पर, Crit लिखना Correct के स्थान पर srl लिखना circle के स्थान पर।

डिसलेक्सिया बालक की पहचान उसका गणित में निष्पादन का निदान करके भी किया जा सकता है। वह सीखने में कठिनाई प्रदर्शित कर सकता है। इसका कारण यह है कि गणित भी एक भाषा है। इसके नम्बरों को याद करने में अक्षरों की भाँति बहुत ध्यान देना पड़ता है।

डिसलेक्सिक की पहचान सदैव सरल नहीं होती, किन्तु ऊपर हमने डिसलेक्सिक बालक की कुछ सामान्य विशेषताओं का वर्णन किया है। उनमें से कोई भी कमी शिक्षक को विद्यार्थी के डिसलेक्सिक होने के संबंध में सावधान कर देगी, किन्तु उसे याद रखना चाहिए कि यह कठिनाइयों का एक पैटर्न हो जो वह तलाश कर रहा है और उसे विद्यार्थी के सीखने का निरीक्षण कुछ समय तक करना चाहिए इससे प्रथम कि वह उसे डिसलेक्सिक समझे।

उपचारात्मक उपाय 2 — यह समझना आवश्यक है कि डिसलेक्सिया एक रोग नहीं है वरन एक विशिष्ट प्रकार का मस्तिष्क है। डिसलेक्सिक एक क्षतिग्रस्त व्यक्ति नहीं है। अनेक मशहूर डिसलेक्सिक हुए हैं। जैसे ऐनसटाइन, ऐडिसन, ल्यूनार्डो डॉ0 विन्सी हन्स किश्चियन ऐडरसन, बुडरो विलसन इत्यादि। आज भी

अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति चिकित्सा, मनोविज्ञान शिक्षा, बैंकिंग तथा इंजीनियरिंग के क्षेत्र में हैं जो डिसलेक्सिक हैं। हजारों साधारण व्यक्ति हैं जिन्होंने अपने समस्या समझकर अपनी योग्यताओं को दृढ़ कर लिया है। उन्होंने भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया है और जीवन में सफलता प्राप्त की है।

हमारी समस्या अज्ञान की है। हम डिसलेक्सिक की समस्या को समझने में असफल हो जाते हैं। यदि उचित सहायता दी जाये तो डिसलेक्सिक को अपनी समस्या सुलझाने के सुनहरे अवसर मिल जायेंगे। वह अपनी बुद्धि और विशिष्ट योग्यताओं का समाज की सेवा के लिए उपयोग कर सकता है।

2.7.2 डिसलेक्सिक को सहायता देने के लिए अग्रलिखित पद लिए जाने चाहिए।

(i) शिक्षकों और अभिभावकों को डिसलेक्सिक की पहचान के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। उनकी समस्या की पहचान डिसलेक्सिक को यह समझाने में सफल होती है कि वह सीख क्यों नहीं पा रहा है और उसकी मुख्य कठिनाई क्या है।

(ii) शिक्षकों को डिसलेक्सिकों के लिए विशिष्ट शिक्षण नीतियों का प्रयोग करना चाहिए। अब अनेक संस्थाएँ उचित सीखने की विधियों को डिसलेक्सिकों के लिए विकसित कर रही हैं और शिक्षकों को ऐसे बालकों के साथ किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए, सिखा रहीं हैं। इस सम्बन्ध में पंजाब विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में भी वर्कशाप इत्यादि का आयोजन किया गया है। एक पत्राचार कार्स भी चण्डीगढ़ से प्रारंभ किया गया है।

(iii) सीखने की प्रविधियाँ एवं नीतियाँ भी ऐसे डिसलेक्सिक के लिए जो वाचन सम्बन्धी या वर्तनी सम्बन्धी अयोग्यताओं से पीड़ित हैं।

अनेक डिसलेक्सिकों की लेख सम्बन्धी समस्याएँ होती हैं जैसे कलम को पकड़ने में कठिनाई अक्षरों को बराबर का नहीं रखना और ऐसे अक्षरों को लिखना कि वह अस्पष्ट या टूटे हों। उनको अपने लेख में अक्षरों को जोड़ कर लिखने में सहायता देनी चाहिए।

अंत में, हम फिर यह कहेंगे कि डिसलेक्सिक सुस्त या बुद्ध नहीं होते हैं। हमें उन्हें डाँटना नहीं चाहिए न ही उन्हें बहुत अधिक परम्परागत सीखने की ओर मेहनत करने को बाध्य करना चाहिए। यह प्रयास उनमें विफलता, चिन्ता तथा नाराजगी को उत्पन्न करेंगे क्योंकि कितना भी अधिक वह परम्परागत सीखने में प्रयास करेंगे वह सफल नहीं होंगे। उन्हें विशिष्ट उपयुक्त सहायता चाहिए जो उन्हें दी जानी चाहिए।

मेरियन वेलशमान एवं जुलिया वेलशमान अनेक सुझाव डिसलेक्सिक बालक को कक्षा-कक्ष में सहायता देने के लिए देते हैं। उनके मुख्य सुझाव हैं : विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ाने में सहयोग देना, विद्यार्थी को प्रतिदिन के पाठ को याद करने के लिए बाध्य न करना, पाठ की पाठ्य सामग्री के संबंध में कठोरता न वर्तना, विद्यार्थी को समय तथा प्रतियोगिता के दबाव में नहीं रखना, सृजनात्मक रूप से आलोचना करना तथा विद्यार्थी को एक लाइन छोड़कर लिखने के लिए प्रोत्साहित करना, इत्यादि।

हम उन विद्यार्थियों की विशेषताओं का संक्षेपीकरण निम्न प्रकार से कर सकते हैं जिनमें सीखने संबंधी अयोग्यतायें या डिसलेक्सिया होता है।

व्यावहारिक प्रतिमान

1. अत्याधिक क्रियाशीलता एवं बेचैनी।
2. सामंजस्य एवं संतुलन की कमी।
3. अवधान में अपर्याप्त।
4. अव्यवस्थित एवं विचलित।
5. निर्धारित कार्य को पूर्ण करने में असफलता।
6. अनियमित निष्पादन— एक क्षेत्र में योग्यता, किन्तु अन्य क्षेत्रों में बहुत अधिक कमजोरी

शैक्षिक निष्पादन

- | | |
|----------|---|
| (a) पठन | (i) पठन प्रवाहन में कमी।
(ii) शब्दों में उलट-फेर (Saw के स्थान पर was)
(iii) शब्दों को छोड़ देना। |
| (b) लेखन | (i) टेढ़े-मेढ़े अक्षर
(ii) सीधी रेखा में लिखना कठिन
(iii) धीमा या सुस्त
(iv) ठीक ढंग से श्यामपट से नकल न कर सकना |
| (c) गणित | (i) गणित के तथ्य भूल जाना
(ii) संख्याओं की गणना इत्यादि में कठिनाई (इकाई और दहाई में गलती करना) |

अपनी प्रगति की जाँच करें।

नोट –

(अ) अपना उत्तर प्रश्न के नीचे दिये गये रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अन्त में दिये गये उत्तर से कीजिए।

(1) मंद अधिगामी बालकों में क्या-क्या समस्या पायी जाती है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(2) डिस्लेक्सिया शब्द किस भाषा से लिया गया है ?

.....

.....

2.8 अतिविशिष्ट बालक (Intellectual Children)

प्रतिभा संपन्न बालक या अति विशिष्ट बालकों में सामान्य बालकों की अपेक्षा कुछ असमानतायें तथा विशेषतायें पाई जाने के फलस्वरूप उन्हें विशिष्ट या प्रतिभा संपन्न बालकों की श्रेणी में रखा जाता है। इस प्रकार के बालक मानसिक बुद्धि में काफी तीव्र होते हैं।

1. विशिष्ट बालक वह है जो किसी एक अथवा कई गुणों की दृष्टि से सामान्य बालकों से पर्याप्त मात्रा में भिन्न होता है।
2. हैरीबाकर असाधारण/विशिष्ट बालक वे है, जो शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक और सामाजिक दृष्टि से सामान्य गुणों से इस सीमा तक विचलित होते हैं, कि उन्हें अपनी अधिक तम क्षमता के अनुसार स्वयं का विकास करने के लिए विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है।

3. क्रो तथा क्रो विशिष्ट प्रकार या विशिष्ट शब्द किसी एक ऐसी विशेषता या उस विशेषता को रखने वाले व्यक्ति पर लागू किया जाता है जबकि उस विशेषता को रखने वाला व्यक्ति सामान्य से उतनी अधिक सीमा तक भिन्न होता है कि वह उसके कारण अपने साथियों का विशेष रूप से ध्यान प्राप्त करता है और उसके व्यवहार की अनुक्रियायें तथा क्रियायें इसी से प्रभावित होती हैं।
4. विशिष्ट बालक वह है, जो बौद्धिक शारीरिक सामाजिक अथवा संवेगात्मक दृष्टि से सामान्य समझी जाने वाली बुद्धि तथा विकास से इतना भिन्न है कि वह नियमित विद्यालय कार्यक्रम से पूर्ण लाभ नहीं उठा सकता तथा विशिष्ट कक्षा अथवा पूरक शिक्षण व सेवा चाहता है।

2.9 अक्षम बालक (Deficiency Children)

अक्षम बालकों से आशय ऐसे बालकों से है, जो शारीरिक विकलांगता के कारण एवं मानसिक रूप से सक्षम न होने के कारण शिक्षा ग्रहण करने में अक्षम होते हैं। अतः अक्षम बालकों को 2 श्रेणियों में बाटा जा सकता है।

1. **शारीरिक विकलांग बालक**— शारीरिक विकलांग बालक से तात्पर्य ऐसे बालकों से होता है, जो सामान्य या साधारण बालकों से शारीरिक मानसिक या संवेगात्मक दृष्टि से पिछड़े हुए होते हैं, जिसके कारण वे सामान्य क्रियाओं में भाग नहीं ले सकते, जिसके कारण उनकी उपलब्धियाँ अधूरी रह जाती हैं तथा वे अपने आप को अन्य बालकों से हीन समझते हैं। ए. एडलर के अनुसार “एक बालक जो शारीरिक दोषों से ग्रस्त है, उसमें हीनता की भावना उत्पन्न हो जाती है इस प्रकार की भावना से बालक को थोड़ी सी संतुष्टि और प्रसन्नता मिलती है, वह इसकी क्षतिपूर्ति प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता या प्रसिद्धि प्राप्त करके, करना चाहता है, इन सबसे उसको संतुष्टि प्राप्त होती है, जो उसके शारीरिक दोषों के कारण हैं”

ऐसे बालक जिनमें ऐसा शारीरिक दोष होता है, जो किसी भी रूप में उसे साधारण क्रियाओं में भाग लेने से रोकता है। या उसे सीमित रखता है, ऐसे बालक को हम विकलांग बालक कह सकते हैं।

2. **मानसिक दृष्टि से पिछड़े बालक**— मानसिक रूप से पिछड़े बालकों को न्यून बुद्धि बालक भी कहा जाता है। न्यून बुद्धि बालक वह है, जिसमें सामान्य बालक से कम बुद्धि है, ऐसे बालक कक्षा में अध्यापक द्वारा दिये गये निर्देशन को सरलता से समझ नहीं पाते। 70 से 80 के बीच बुद्धि—लब्धि (आई0क्यू0) वाले बालक इस वर्ग में आते हैं। टर्मन के अनुसार 70 से कम बुद्धि वाले बालक मानसिक रूप से विकलांग बालक कहलाते हैं। ऐसे बालक मानसिक क्रियाओं में सामान्य बालकों की बराबरी कभी नहीं कर सकते। मानसिक रूप से पिछड़े बालकों का मानसिक विकास सामान्य बालकों की तुलना में आधे से लेकर 3 चौथाई तक होता है। ऐसे बालक निरंतर अस्वस्थ रहते हैं। इन बालकों की शब्दावली अपूर्ण तथा दोष पूर्ण होती है। ऐसे बालकों की स्मृति शक्ति दुर्लभ होती है। विद्यालय में ऐसे बालकों का अधिगम बहुत धीमा होता है।

2.10 प्रतिभाशाली बालक **The Gifted Childern**

बच्चों में वैयक्तिक भेद पाया जाता है। कोई बालक शरीर से हष्ट—पुष्ट होता है, तो कोई दुर्बल। ऐसे ही मानसिक दृष्टि से भी बच्चों में भेद पाया जाता है। कोई बालक प्रतिभाशाली, कोई पिछड़ा होता है, कोई मन्दबुद्धि तो कोई अकाल—परिपक्व होता है। इस कारण उसकी अपनी आवश्यकताओं के अनुसार पृथक् पृथक् शैक्षिक आवश्यकताएं होती हैं। सभी के लिए समान शिक्षाव्यवस्था उपयोगी नहीं हो सकती। इस प्रकार के वैयक्तिक भेद को ध्यान में रखते हुए शिक्षा—व्यवस्था करना आवश्यकता है इसलिए हमें यह समझना चाहिए कि प्रतिभाशाली अकाल पक्व और पिछड़े हुए बालक कैसे होते हैं, उनकी क्या विशेषताएं और विशिष्ट आवश्यकताएं होती हैं ? तभी हम उनके लिए उपयुक्त शिक्षा की व्यवस्था कर सकते हैं अतः क्रमशः निम्न प्रकार के बालकों का विवेचन किया जा सकता है। प्रतिभाशाली बालक विशिष्ट बालकों में शामिल किये जाते हैं। क्योंकि वे उच्च बुद्धि के कारण विशेष ध्यान चाहते हैं। इसी कारण वे सामान्य बालकों से इतना भिन्न हो जाते हैं कि उनके विशेष प्रकार के परीक्षण, शिक्षा और समायोजन की आवश्यकता होती है। यदि ऐसे बालकों का घर और स्कूल में उचित ध्यान रखा जाये तो ये प्रतिभाशाली बालक सिद्ध होते हैं। यदि उनकी ओर ध्यान नहीं रखा जाता है तो उनकी प्रतिभाशाली उन्हें आवंछित व्यवहारों की ओर ले जा सकती है।

प्रतिभाशाली बालक सामान्य बालकों से सभी बातों में श्रेष्ठ होता है। ये बालक उच्च बुद्धि-लब्धि वाले होते हैं और यह बुद्धि लब्धि 120 से ऊपर होती है। ये बालक एक साधारण बालक से बहुत अधिक योग्य होते हैं। जो कार्य इन्हें दिया जाता है, उसे शीघ्र ही पूरा कर लेते हैं। ये बालक साधारण बालक की कक्षा में अरुचि महसूस करते हैं। प्रतिभाशाली बालकों के विषय में कुछ विद्वानों के विचार निम्नलिखित हैं :-

टरमन व ओडन- “प्रतिभाशाली बालक शारीरिक गठन, सामाजिक समायोजन, व्यक्तित्व के लक्षणों, विद्यालय उपलब्धि, खेल की सूचनाओं और रुचियों की बहुरूपता में सामान्य बालकों से बहुत श्रेष्ठ होते हैं।”

स्किनर एवं हैरीमैन- “प्रतिभाशाली शब्द का प्रयोग उन एक प्रतिशत बालकों के लिए किया जाता है जो सबसे अधिक बुद्धिमान होते हैं।”

कॉलसनिक के अनुसार “वह प्रत्येक बालक जो अपनी आयु-स्तर के बालकों में किसी योग्यता में अधिक हो और जो हमारे समाज के लिए कुछ महत्वपूर्ण नई दे हो।”

पॉल विट्टी- “प्रखर बुद्धि बालक वह है जो किसी कार्य को करने के प्रयास में निरन्तर उच्च स्तर बनाये रखता है।

प्रतिभावना शाली बालिका

मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से यह स्पष्ट हो चुका है कि बालिकाएं, बालकों की अपेक्षा मानसिक विकास में पिछड़ी हुई नहीं होती। बुद्धि, व्यक्तित्व, रुचि, सामाजिक गुण आदि में प्रतिभावान बालिका, प्रतिभावान बालक से कम नहीं होती। टरमैन के अनुसार 13 वर्ष की अवस्था तक बालिकाएं, बालकों की अपेक्षा बुद्धि में अधिक वृद्धि करती है। चौदहवें वर्ष में आकर बालिकाओं का बौद्धिक विकास कुछ रुक सा जाता है। परीक्षणों से इस बात का पता चलता है कि प्रतिभावान बालक, प्रतिभावान बालिका की अपेक्षा सामान्य ज्ञान एवं अंक गणित में अपेक्षाकृत ज्ञान रखते हैं।

प्रतिभावान बालिकाएं प्रतिभावान बालकों की अपेक्षा कला, साहित्य नाटक, नृत्य और संगीत में अधिक कुशल होती हैं। उनमें सौन्दर्यानुभूति बालकों की अपेक्षा अच्छी होती है। प्रतिभावान बालिकाएं प्रतिभावान बालकों की अपेक्षा अधिक संवेगशील होती हैं। इसलिए वे अपेक्षाकृत संवेगात्मक पुस्तकों और लेखों को पढ़ना अधिक पसन्द करती हैं। बालकों की भांति बालिकाएं वीररस की रचनाएं पढ़ने में रुचि नहीं लेती। वे करुण रस, वाल्सल्स रस और हास्य रस रचनाओं में अधिक रुचि लेती हैं।

बालिकाएं बालकों की अपेक्षा अपने उत्तरदायित्व के प्रति अधिक सजग रहती हैं। इसी कारण उनका कार्य अधिक उत्तरदायित्व से पूर्ण होता है। बालिकाएं, बालकों की अपेक्षा अपनी कक्षा में अधिक उपस्थित रहती हैं। लड़कों में अनुपस्थिति का प्रतिशत अधिक होता है। छात्राएं अपने कर्तव्य के प्रति अधिक सजग रहती हैं। इनकी खेलने में बालकों की अपेक्षा कम रुचि होती है।

2.10.1 प्रतिभावान बालकों की पहचान

प्रत्येक कक्षा में प्रतिभावान बालक होते हैं। अतः यह आवश्यक है कि ऐसे बालक-बालिकाओं का पता लगाकर उनका अधिकतम विकास किया जावे। प्रतिभावान बालक बालिकाएं राष्ट्र व समाज की अमूल्य निधि होते हैं। प्रतिभावान बालक-बालिकाओं की पहचान के लिए निम्न लिखित विधियों का प्रयोग किया जा सकता है :-

- (1) बुद्धि परीक्षण – प्रतिभावान बालक-बालिकाओं की पहचान के लिए व्यक्तिगत परीक्षण उत्तम साधन है।
- (2) उपलब्धि परीक्षण – बुद्धि परीक्षा के अतिरिक्त उपलब्धि परीक्षण द्वारा भी प्रतिभावान बालक-बालिकाओं की पहचान की जा सकती है।
- (3) शिक्षक अवलोकन – बालक-बालिकाएं शिक्षक के संपर्क में रहते हैं वह उनका दैनिक अवलोकन करता है। वह छात्रों में दैनिक क्रिया कलापों परीक्षा परिणामों आदि के आधार पर प्रतिभावान बालकों का पता लगा सकते हैं।
- (4) संबंधित व्यक्तियों से सूचनाएं – प्रतिभावान बालक-बालिकाओं के वैयक्तिक के बारे में संबंधित व्यक्तियों से अध्यापक छात्रों की रुचियों आदि का ज्ञान प्राप्त कर उनकी प्रतिभा का पता लगा सकते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यालयीन प्रगति रिकार्ड, साक्षात्कार, कक्षा व्यवहार व कार्यप्रणाली द्वारा भी प्रतिभावान बालक-बालिकाओं की पहचान की जा सकती है। प्रतिभावान बालकों की बुद्धिलब्धि 120 के ऊपर होती है। प्रतिभावान बालकों का शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक विकास अन्य बालकों की तुलना में जल्दी व उच्चकोटि का होता है। ये बच्चे कठिन कार्यों में रुचि लेते हैं। ये बालक किसी घटना का बारीकी से निरीक्षण करते हैं। इन बच्चों का शब्द कोष विस्तृत होता है। बुद्धि की व्यक्तित्व परीक्षा में उच्च स्थान प्राप्त करते हैं। किसी विषय का गहन अध्ययन करते हैं। इन बालकों का सामान्य ज्ञान उच्च स्तरका होता है। इन बालकों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण होता है। ये बालक अपने से बड़ों के साथ दोस्ती करने में झिझक महसूस नहीं करते हैं। प्रतिभावान बालकों की रुचियों में पर्याप्त विभिन्नता होती है। ये बालक अनेक प्रकार के कार्यों में रुचि लेते हैं। अपनी

रुचि के कार्यों में बड़ी लगन तथा धैर्य के साथ कार्य करते हैं। प्रतिभाशाली बालकों का मानसिक स्वास्थ्य उत्तम होता है। प्रतिभाशाली बालकों में सहयोग, सहिष्णुता, ईमानदारी, दयालुता तथा परोपकार जैसे मानवीय गुण अपेक्षाकृत अधिक होते हैं। ये बालक खेलकूद में अधिक भाग नहीं लेते हैं। यदि वे भाग लेते हैं तो सफलता प्राप्त करते हैं। खेलकूद की अपेक्षा अपने से बड़ों के साथ मानसिक चिन्तायुक्त वाद-विवादों में भाग लेना अधिक पसंद करते हैं। ये बच्चे बड़े होकर परिवारिक जीवन में अपेक्षाकृत सुखी होते हैं। ये बच्चे बड़े होकर अपने व्यवसाय में अपेक्षाकृत अधिक सफलता प्राप्त करते हैं। इन बच्चों में तर्क-शक्ति पर्याप्त होती है। ये बच्चे चिन्तन प्रधान होते हैं। ये बच्चे समय को वर्बाद करना पसंद नहीं करते। अधिकांशतः विनोदप्रिय होते हैं।

2.10.2 प्रतिभावान बालकों की समस्याएँ

प्रतिभावान बालक की अपनी अलग समस्याएँ होती हैं। उनकी तरफ भी ध्यान देना आवश्यक है —

1. सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि प्रतिभावान बालक को पहचान लिया जाये। कभी-कभी ऐसे बालकों को शिक्षक नहीं पहचानता है और उन्हें पिछड़े बालक मान लेता है जिससे उनका उचित विकास नहीं हो पाता।
2. साधारण कक्षाओं में पढ़ने पर प्रतिभावान बालक को अपनी क्षमता का पूर्ण विकास करने का अवसर नहीं मिल पाता है। इस कारण उसकी प्रतिभा कुण्ठित हो जाती है।
3. ऐसे बालक की मानसिक क्षमता अधिक होने के कारण वह वर्ष भर के कार्य को कम समय में ही समाप्त कर लेता है। परन्तु उसे साधारण बच्चों की गति से ही चलना पड़ता है। इसलिए उसकी सीखने की गति उसकी योग्यताओं के अनुपात में नहीं हो पाती। इस कारण उसका समायोजन उचित प्रकार से नहीं हो पाता है।
4. सामान्य कक्षा में पढ़ने पर प्रतिभावान बालकों को अपनी विशेष योग्यता का शीघ्र पता चल जाता है। इस कारण उसमें अहं भाव विकसित हो जाता है तथा अन्य बालकों को हेय दृष्टि से देखता है। इसकारण उनका सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन समाप्त होने लगता है।
5. सामान्य कक्षा में प्रतिभाशाली बालकों के रहने से सामान्य बालक उनसे सदैव पीछे रहते हैं तथा उन्हें अपनी क्षमता पर दुःख एवं निराशा होती है। इस

कारण उनका मानसिक समायोजन नहीं हो पाता है।

6. कभी-कभी ऐसे बालक अध्यापक का निरादर, झगड़ा, तथा दोषारोपण करते रहते हैं। इस कारण इनकी तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि उनकी संख्या कम होती है। इसलिये अध्यापक इनकी तरफ आसानी से ध्यान दे सकता है। ये बालक समाज के विकास में उचित योगदान कर सकते हैं।
7. प्रतिभावान बालकों का घर में भी उचित समायोजन नहीं हो पता क्योंकि वे यह चाहते हैं कि उनको साधारण बच्चों से अधिक प्रतिष्ठा मिले। इस कारण माता-पिता तथा इन बच्चों में लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं।

2.10.3 प्रतिभावान बालक की शिक्षा

प्रतिभाशाली बालक की शिक्षा में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए –

1. प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा के लिये सर्वप्रथम यह पता लगाना चाहिये कि प्रतिभावान बालक कौन है। प्रतिभावान छात्रों के चयन में प्रायः गलती भी हो जाती है। इन छात्रों का चुनाव पिछली कक्षाओं के अंक, अध्यापक की राय, मनोवैज्ञानिक परीक्षा से, अभिभावकों की राय द्वारा तथा वर्तमान कक्षा में छात्र की प्रगति के आधार पर करना चाहिए।
2. तरक्की देना— कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार प्रतिभावान बालक को एक कक्षा का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर दूसरी कक्षा में चढ़ा देना चाहिए। इससे उन्हें पूर्ण मानसिक विकास का अवसर मिलेगा।
3. विशेष विद्यालय एवं पाठ्यक्रम— प्रतिभावान बालकों की शिक्षा के लिये विशेष विद्यालयों की व्यवस्था की जानी चाहिए। इनके लिये सामान्य पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ विशेष पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जानी चाहिए। परन्तु इस बात का ध्यान रखा जाये कि पाठ्यक्रम इतना विस्तृत न हो जाये कि वह उन पर बोझ स्वरूप हो जाये।
4. व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना – अध्यापक को चाहिए कि वह प्रतिभावान छात्रों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दे तथा उन्हें व्यक्तिगत रूप से शिक्षण प्रदान करे, तभी उनकी प्रतिभाओं का उचित विकास हो सकता है।
5. अच्छे पुस्तकालय और प्रयोगशाला— प्रतिभावान बालक के लिये अच्छे पुस्तकालय व प्रयोगशालाओं का होना अति आवश्यक है जिससे वह ज्ञानार्जन कर सके तथा अपना और अधिक विकास कर सके।
6. विशेष शिक्षण विधि – प्रतिभाशाली बालकों को पढ़ाने के लिये विशेष शिक्षण

विधि भी आवश्यक होती है। ऐसे छात्रों की प्रयोगात्मक कार्य, रचनात्मक कार्य एवं शोध कार्य आदि में रुचि होती है। अतः इनकी शिक्षण विधियों में प्रोजेक्ट विधि, अभिनय विधि, स्वतंत्र अध्ययन, शोध विधि, पर्यटन विधि एवं नवीन उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए।

7. पाठ्यक्रम सहगामी क्रियायें – प्रतिभावान बालकों का पूर्ण विकास करने के लिए उन्हें खेल, खेल प्रतियोगिताओं, नाटक, संगीत, नृत्य, भाषण एवं अन्य सामूहिक क्रियाओं में लगाना चाहिए।
8. प्रतिभाशाली अध्यापक – प्रतिभाशाली बालकों को पढ़ाने के लिये प्रतिभाशाली अध्यापकों का चयन करना भी आवश्यक है। इन अध्यापकों में उत्कृष्ट बुद्धि, अभिप्रेरणा प्रदान करने की क्षमता, सहानुभूति, आलोचना सहन करने की शक्ति, ज्ञान के प्रति प्रेम, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सामान्य ज्ञान का होना अति आवश्यक है।
9. हालंग वर्थ के अनुसार, प्रतिभावान बालकों को अपनी संस्कृति के विकास की शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि वे समाज में अपना उचित स्थान ग्रहण कर सकें।
10. प्रतिभाशाली बालकों को सामान्य बालकों की सामाजिक क्रियाओं से पृथक् नहीं रखना चाहिए। इन क्रियाओं में भाग लेकर ही उनको सामाजिक अनुभव प्राप्त हो सकते हैं।
11. ऐसे बच्चों को नेतृत्व का प्रशिक्षण देना चाहिए। क्योंकि हम ऐसे बालकों से नेतृत्व की आशा करते हैं, इसलिए उनको विशिष्ट परिस्थितियों में नेतृत्व का अवसर और प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

अपनी प्रगति की जाँच करें।

नोट –

- (अ) अपना उत्तर प्रश्न के नीचे दिये गये रिक्त स्थान में लिखिए।
- (ब) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अन्त में दिये गये उत्तर से कीजिए।
- (1) प्रतिभा शाली बालकों की बुद्धि लब्धि कितनी होती है ?

.....

(2) व्यक्तिगत भेद को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक कौन से हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2.11 वैयक्तिक भेद के आधार पर शिक्षा व्यवस्था

(Individual Differences)

आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार कोई भी व्यक्ति सामान्य व्यक्तित्व नहीं रखता। सभी व्यक्ति, वैयक्तिक भेद रखते हैं। जितने भी मनोवैज्ञानिक शोध और परीक्षण हुए हैं सभी से यह स्पष्ट होता है कि बालकों में वैयक्तिक भेद होता है। सभी बालक शारीरिक और मानसिक गुणों की दृष्टि से समान नहीं होते। कोई दो व्यक्ति देखने में समान लग सकते हैं, परन्तु वे समान होते नहीं। यहाँ तक कि दो जुड़वा बच्चे भी समान नहीं होते, भले ही वे समान लिंगी हों। वैयक्तिक भेद से ही व्यक्ति समान वंशानुक्रम और वातावरण के होते हुए भी अलग-अलग शारीरिक और मानसिक विकास कर पाते हैं।

व्यक्ति की शारीरिक आकृति उसकी मनोवृत्ति को प्रभावित करती है। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से पता चलता है कि व्यक्ति की शारीरिक बनावट उसकी उस मनोवृत्ति को भी प्रभावित करती है। जिससे वह वातावरण की किसी वस्तु को सुन्दर या असुन्दर कहता है। कुछ मनोवैज्ञानिक इस बात से सहमत नहीं हैं। उनका कहना है कि लम्बा व्यक्ति प्रभावशील नहीं होता, नाटा व्यक्ति ही अधिक प्रभावशील होता है। इसका कारण वे यह देते हैं कि नाटा व्यक्ति अपने कद के कारण समाज में नगण्य न समझा जाय, इसलिए वह अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने का प्रयत्न करता है और भांति भांति से समाज पर प्रभाव डाला करता है।

इसके विपरीत कोई नवीन बात के प्रति भी उदासीन रहता है और उसे जानने का प्रयत्न नहीं करता। कोई अपने में संचय-प्रवृत्ति की प्रबलता के कारण लोभी होता है तो कोई केवल आवश्यकता की पूर्ति मात्र के लिए संचय करता है। यदि इन मूल प्रवृत्तियों के शोधन करने की उपयुक्त शिक्षा सभी को मिले तो सभी वैज्ञानिक नहीं बन पाते, सभी अन्याय की प्रवृत्ति से नहीं लड़ते, सभी अच्छे कलाकार

या साहित्यकार नहीं बन पाते। इस प्रकार मूल प्रवृत्तियों की समानता होते हुए भी लोगों में वैयक्तिक भेद पाया जाता है।

वंशानुक्रम (**Heredity**) ऐसा कारण है जो समान वातावरण के होते हुए भी व्यक्ति में वैयक्तिक भेद पैदा कर देता है। वंशानुक्रम के प्रभाव से ही कोई तीव्र बुद्धि का तो कोई मन्दबुद्धि का होता है, कोई सुन्दर और कोई भद्दा होता है, कोई लम्बा तो कोई नाटा होता है, किसी का शरीर बलिष्ठ तो कोई दुर्बल होता है।

पर्यावरण के भेद के कारण कोई बालक अधिक कुशल और स्वस्थ बन जाता है तो कोई अकुशल और रोगी रह जाता है। पर्यावरण दोनों प्रकार का होता है—भौगोलिक और सामाजिक। भौगोलिक और सामाजिक पर्यावरण के भेद के कारण अंग्रेज, भारतीय से भिन्न है, नीग्रो श्वेत अमेरिकन से भिन्न है, ग्रामीण व्यक्ति शहरवासी से भिन्न है और पढ़े लिखे घर का बालक अनपढ़ घर वाले बालक से भिन्न होता है।

लिंग भेद भी वैयक्तिक भेद का प्रमुख कारण होता है। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि स्त्री पुरुष की अपेक्षा अधिक कोमलांगी होती है। स्त्री पुरुष से अधिक संवेदनशील, लज्जायुक्त, मृदु—भाषी, दया और स्नेह से सिक्त, ममता से पूर्ण, शीलवान होती है। विपरीत पुरुष स्त्रियों की अपेक्षा वीर, धीर, शक्ति—शाली, बुद्धिमान, साहसी, अधिक क्रोधी या कठोर हुआ करते हैं। भाषा और स्मृति की दृष्टि से स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक कुशल होती है। लड़की इसी कारण लड़के से स्मरण करने में तेज और बोलने में शीघ्रतर कुशल हो जाती है। इसी कारण लड़कियाँ, लड़कों की अपेक्षा कम भूलती हैं और परीक्षा में भूल कम करती हैं। कुछ लोगों का विचार है कि स्त्रियाँ बुद्धि से पुरुष से कम होती हैं। परीक्षाओं से पता चलता है कि केवल शारीरिक बल अधिक चाहने वाले क्षेत्रों में स्त्रियाँ कम प्रतिभा दर्शाती हैं, शेष सभी क्षेत्रों में वे पुरुषों के समान उन्नति कर रही हैं। हमारी सभ्यता संस्कृति और सामाजिक वातावरण में स्त्रियों को वैसा वातावरण नहीं दिया जैसा पुरुषों को दिया है। फलतः स्त्री पुरुष में वैयक्तिक भेद मिलता है।

2.11.1 वैयक्तिक भिन्नताओं के प्रभावी कारक।

- 1 बालक की पारिवारिक पृष्ठभूमि— विद्यालय में बालक विभिन्न परिवार एवं समुदायों से आते हैं, उनके उपर अपने वंशानुक्रम एवं पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है।

2. प्रजातीय अंतर— एक देश में रहने वाली विभिन्न जातियों और प्रजातियों में अंतर होता है। भारत में आर्य द्रवणों में अंतर स्पष्ट है। इसी प्रकार से हिन्दुओं के विभिन्न वर्गों में अंतर स्पष्ट होता है। संसार में रहने वाले विभिन्न प्रजातियों के व्यक्तियों में मानसिक आयु का अध्ययन कार्ल विंघम ने किया है।

देश	मानसिक आयु	देश	मानसिक आयु
इंग्लैण्ड	14.2	बेल्जियम	12.56
स्काटलैण्ड	13.77	आयरलैण्ड	12.02
हालैण्ड	13.76	आस्ट्रिया	12.16
जर्मनी	13.41	टर्की	11.96
स्वेत अमेरिकन	13.32	ग्रीस	11.88
डेनमार्क	12.26	रूस	11.45
कनाडा	13.25	इटली	11.02
स्वीडन	12.96	पोलैण्ड	10.96
नार्वे	12.76	नीग्रो अमेरिकन	10.71

अध्यापक द्वारा क्रिया—कलाप

अपने पास के किन्ही पाँच बच्चों को चुनकर निम्न जानकारी एकत्रित करें।

नाम	
कक्षा	
अंतिम कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि	
ऊँचाई	
बजन	
रुचि	
पसंदीदा विषय	

नाम	कक्षा	अंतिम कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि	ऊँचाई	रुचि	पसंदीदा विषय
रमेश	9	70 प्रतिशत	5 फुट	खेल	गणित

2.11.2 वैयक्तिक भिन्नताओं के प्रकार

1 **शारीरिक बनावट में अंतर** – संसार का प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक बनावट के आधार पर अन्य व्यक्तियों से भिन्न होता है, इसके आधार पर शारीरिक, गठन, रूप, रंग, भार, स्वास्थ्य, छोटे लंबे आदि होते हैं। शारीरिक बनावट के आधार पर केशमर ने व्यक्तियों को तीन भागों में बांटा है।

(1) **एस्थेनिक**— इस प्रकार के व्यक्तियों का शारीरिक गठन बहुत ही कमजोर होता है, ये दुबले पतले लम्बे और पतले सीने के होते हैं।

(2) **एथलैटिक** – इस प्रकार के व्यक्तियों का शारीरिक गठन बहुत अच्छा होता है। सीना चौड़ा, कंधे मजबूत और मासपेशियाँ कसी एवं गठी हुई होती है।

(3) **पिकनिक**— इसके अन्तर्गत व्यक्ति मोटे और भारी शरीर वाले होते हैं। इनकी लम्बाई कम और मोटाई अधिक होती है।

शैल्डन का अध्ययन— केशमर के आधार पर शैल्डन 1940 ने इस कार्य को आगे बढ़ाया और शारीरिक बनावट के आधार पर निम्न लिखित भागों में बांटा है।

व्यक्ति भेद		शारीरिक विशेषताएं
1	एण्डोमोर्फ़ी	मोटा, कम लंबाई, तेल युक्त शरीर अर्थात् लाला दुकानदार के समान शरीर।
2	मेसोमोर्फ़ी	शरीर शक्तिशाली एवं गठा हुआ, मासपेशियाँ मजबूत चौड़ा सीना अर्थात् खिलाडी या सिपाही के समान।
3.	एक्टोमोर्फ़ी	लम्बा, दुबला पतला, कम चौड़ा, सीना अर्थात् गरीब परिवार जैसा व्यक्ति।

2 मानसिक भिन्नताएं – संसार के सभी व्यक्ति अपनी मानसिक भिन्नताओं को रखते हैं, यदि वे समान भी हैं तो उनका प्रयोग समान रूप से नहीं कर पाते हैं और अंतर स्पष्ट हो जाता है। बुद्धि लब्धि भिन्नता को निम्न वर्गीकरण से प्रस्तुत किया गया है।

बुद्धि-लब्धि	बुद्धि प्रकार
140 से अधिक	प्रतिभाशाली
120-140	अतिश्रेष्ठ बुद्धि
110-120	श्रेष्ठ बुद्धि
90-110	सामान्य बुद्धि
80-90	मंद बुद्धि
70-80	क्षीण बुद्धि
70 से कम	निश्चित क्षीण बुद्धि
50-70	Minded
25-50	अल्प बुद्धि
25 से कम	मूर्ख और

2.11.3 वैयक्तिक भेद के अनुसार शिक्षा

रुसों के अनुसार बालक एक ऐसी पुस्तक की भांति है जिसका अध्ययन करके यह पता चल सकता है कि बालक की वैयक्तिक क्षमताएं क्या हैं और वह दूसरे बालकों से किस प्रकार भिन्न है। इसी वैयक्तिक भेद को ध्यान में रखते हुए शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। आजकल वैयक्तिक भेद को ध्यान में रखते शिक्षा नहीं दी जाती। कक्षा में प्रायः ऐसे सभी बालक होते हैं जिनकी बुद्धि लब्धि 90 या 100 से 130 के बीच होती है। इस प्रकार कक्षा में मन्द और तीव्र दोनों प्रकार की बुद्धि के बालक होते हैं, परन्तु जब उन्हें शिक्षा दी जाती है तो इस भेद को ध्यान में नहीं रखा जाता। सबको सामान्य बुद्धि मानकर शिक्षा दी जाती है यदि शिक्षक तीव्र बुद्धि बालकों के हिसाब से पढ़ायेगा तो मंद बुद्धि बालक उससे कोई लाभ नहीं उठा सकते और यदि मंद बुद्धि बालकों की दृष्टि से कक्षा को पढ़ाया जायेगा तो तीव्र बुद्धि बालक उससे लाभान्वित नहीं हो सकते हैं। इसलिए वैयक्तिक शिक्षण की व्यवस्था पर ध्यान देना अनिवार्य है।

वैयक्तिक शिक्षण का तात्पर्य प्रत्येक बालक के लिए अलग-अलग पाठ्यक्रम देने या अलग-अलग स्कूल खोलने या अलग-अलग समय में पढ़ने से नहीं है,

इसका अर्थ है कि बालकों की रुचियों और क्षमताओं के अनुसार बालकों का वर्गीकरण कर लिया जाये और प्रत्येक वर्ग की उसकी रुचि और क्षमता का कार्य करने को दिया जाय। कोई बालक गणित में, कोई भाषा में, कोई कला या संगीत में और कोई शिल्प कार्य में रुचि और क्षमता रख सकते हैं। उन्हें अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार सम्बन्धित विषयों में कार्य करने का अवसर दिया जाये। इस व्यवस्था में शिक्षक को अनावश्यक नहीं माना जा सकता। कक्षा शिक्षक की तो प्रत्येक समय पर पथ प्रदर्शन के लिए आवश्यकता है।

- (1) कक्षा में बुद्धि लब्धि के आधार पर छात्रों का वर्गीकरण कर लिया जाय।
- (2) समान बुद्धि लब्धि के 15-20 छात्रों का एक वर्ग बना दिया जाय।
- (3) प्रत्येक वर्ग के लिए वैयक्तिक भेद को ध्यान में रखते हुए अध्यापक को पाठ्यक्रम में परिवर्तन लाने की स्वतंत्रता दी जाय।
- (4) रुचि और आवश्यकता के अनुकूल विविध क्रियाओं को कराने का अवसर छात्रों को दिया जाये।

वैयक्तिक भेद को ध्यान में रखते हुए शिक्षा देने के लिए एक निश्चित सीमा के बुद्धि लब्धि वाले बालक अलग-अलग वर्गों में रख जायें। यह बुद्धि 8-10 की बुद्धि-लब्धि के अन्तर से हो सकती है। अर्थात् 80 से 90 तक की बुद्धि-लब्धि वाले बालक एक वर्ग में 90 से 100 तक की बुद्धि-लब्धि वाले एक दूसरे वर्ग में रखे जायें।

योग्यता के अनुसार अर्थात् शिक्षा लब्धि के अनुसार बालकों का वर्गीकरण किया जा सकता है। बालक की योग्यता के अनुसार ही उसे शिक्षण देने की विधि का उपयोग किया जाय। जिन विषयों को बालक तीव्रता से सीखता हो उन्हें स्वयं सीखने की प्रेरणा उन्हें देनी चाहिए। तीव्र बुद्धि के बालकों को सामान्य पाठ्यक्रम देने के अतिरिक्त पृथक् से कार्य देना ठीक रहेगा। इससे वह काम में लगा रहेगा और काम से ऊबेगा नहीं। मन्द बुद्धि बालक को शिक्षक द्वारा अतिरिक्त सहायता और सुविधाएं दी जायें तो वह भी सीखने में सफल हो सकता है। विनेका सिस्टम में शिक्षक बालक को निर्दिष्ट उद्देश्य तक पहुंचाने के लिए कुछ अभ्यास कार्य देता है। अभ्यास कार्य पर कुछ निदानात्मक प्रश्न करके यह जान लिया जाता है कि बालक उद्देश्य तक कितना पहुंच पाया है। काण्टेक्ट प्लान में विनेका प्रणाली और उल्टन प्लान दोनों का समन्वय है। इसमें डाल्टन प्लान की भांति बच्चे के लिए विषय संबंधित काम का कोटा निर्धारित कर दिया जाता है और विनेका प्रणाली की भांति किये गये कार्य पर निदानात्मक प्रश्न कर लिये जाते हैं। इससे बालक की उन्नति भी

जान ली जाती है। एक्टिविटी प्रोग्राम में वैयक्तिक शिक्षण की सबसे अधिक सुविधा दी जाती है। इस पद्धति पाठ्यवस्तु का निर्धारण बालकों की रुचि और आवश्यकता के आधार पर किया जाता है। बालक पर कोई काम थोपा नहीं जाता।

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना है। बालक के शैशव से ही वैयक्तिक भेद के अनुसार उचित वातावरण देकर शिक्षा की उपयुक्त व्यवस्था करनी चाहिए। विकास की विभिन्न अवस्थाओं के अनुकूल बालक को शिक्षा देना अधिक उपयुक्त होगा। हम जानते हैं शिशु, बालक, किशोर, युवा और प्रौढ़ की अपनी-अपनी अलग-अलग ऐसी आवश्यकता है जिनकी अवहेलना नहीं की जा सकती। इसलिए बालक की आवस्था और वैयक्तिक भेद को ध्यान में रखते हुए शिक्षित किया जाय और उसके सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाय।

अतः स्पष्ट है कि कोई भी व्यक्ति सामान्य व्यक्तित्व का नहीं। सभी में वैयक्तिक भेद। वंशानुक्रम, वातावरण और लिंग भेद के कारण लोगों में वैयक्तिक भेद। व्यक्ति की शारीरिक बनावट और उसकी मनोवृत्ति में घनिष्ठ सम्बन्ध। लम्बे व्यक्ति की अपेक्षा नाटे व्यक्ति का व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली। मूल-प्रवृत्तियों की क्रियाशीलता सब में समान नहीं। स्वभाव की पुष्टि से भी वैयक्तिक भेद।

2.12 **इकाई सारांश—** शिक्षण अधिगम के संदर्भ में संसार में अनेक प्रकार के बालक बालिकाएं पायी जाती हैं, जो सीखने की दृष्टि से कई बालक बहुत अच्छा प्रभाव डालते हैं। उन्हें प्रतिभाशाली बालक या विशिष्ट बालक कहा जाता है। इनकी बुद्धि लब्धि उच्च स्तर की होती है और कुछ ऐसे बालक होते हैं, जो अपना काम अच्छे से नहीं कर पाते, उनका दिमाग उतना तेज नहीं होता वह क्लास में पिछड़े हुए रहते हैं उन्हें मंद अधिगामी बालक कहते हैं और कुछ बालक ऐसे बालक तोतलाते हैं तो शब्दों को उलट पुलट कर लिखते हैं वे डिस्लेक्सिया के सिकार होते हैं। बालकों में व्यक्तिगत भेज का पाया जाना एक आम बात है। कई परिस्थितियों वंशानुक्रम वातावरण प्रजाति भेद के कारण अलग अलग होते हैं।

2.13 **दीर्घ एवं लघु प्रश्न**

प्रश्न नं०-1 मंद बुद्धि बालकों की क्या समस्याएँ होती हैं।

प्रश्न नं०-2 डिस्लेक्सिया बालक की पहचान कैसे करोगे।

लघु प्रश्न —

प्रश्न नं०-1 प्रतिभाशाली बालक की बुद्धि लब्धि कितनी होती है।

90 से 110 110 से 120 85 से 90 65 से 75

प्रश्न नं०-2 वैयक्तिक भेद के मुख्य कारण लिखो ?

2.14 इकाई के उत्तरों की जाँच कीजिए।

उत्तर नं-1 मंद अधिगामी बालकों की समस्यायें— ज्ञानात्मक अधिगम समस्यायें, भाषा

तथा वाणी की समस्यायें, श्रवण संबंधी समस्यायें, दृष्टि तथा व्यावहारिक समस्यायें, सामाजिक तथा संवेगात्मक समस्यायें,

उत्तर नं०-2 डिक्सलेकिया शब्द ग्रीक भाषा से लिया गया।

उत्तर नं०-3 प्रतिभाशाली बालकों की बुद्धि लब्धि 1-20 से अधिक होती है।

उत्तर नं०-4 पारिवारिक दृष्टिकोण, प्रजातीय अंतर दृष्टिकोण।

2.15 संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. चौबे, डॉ० एस.पी., शैक्षिक मनोविज्ञान के मूलाधार
चौबे, डॉ० अखिलेश, प्रथम संस्करण 2004-05
इन्टर नेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ
2. शर्मा आर० ए० विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप संस्करण 2008, आर०लाल० बुक डिपो मेरठ
3. पाठक, पीडी शिक्षा मनोविज्ञान एडीशन 2011 अग्रवाल पब्लिकेशन
4. माथुर एस एस शिक्षा मनोविज्ञान अट्ठाईसा संस्करण 7-8,
आगरा पब्लिकेशन, आगरा-7
5. शर्मा, श्रीमती आर के दुबे, श्रीकृष्ण नवी संस्करण राधा प्रकाशन मंदिर
आगरा

डॉ० चंदा मोदी,

एल०आई०जी०-100 हर्षवर्धन नगर,

माता मंदिर के पास, भोपाल मध्यप्रदेश

पिन कोड-462003

मो० 08989109695, 9406533169

chandamodi 61@gmail.com